Interactive Rajasthan History

राजस्थान का इतिहास, एक कहानी की तरह:
धरती और पहले लोगों से 1 नवंबर 1956 तक

खंड 1 · इतिहास · 135 दोहरे पन्ने



मुकेश के. शर्मा
शिवाली शर्मा

किताब के भीतर से पांच विषय

यह **खंड 1: इतिहास** का नमूना है। पूरी किताब में 16 कड़ियां और 135 दोहरे पन्ने हैं, हर दोहरे पन्ने पर एक विषय। यहां उनमें से पांच विषय हैं, वैसे ही जैसे वे किताब में छपे हैं। पहले अगले दो पन्नों पर पूरी सूची देख लीजिए, फिर पन्ने पलटिए।

1 चित्तौड़, आज सुबह

प्रस्तावना · किताब के पन्ने 10-11

एक पहाड़ी, तेरह सौ साल: चित्तौड़ के किले का नक्शा, जिसमें हर दरवाजा, कुंड और मीनार अपनी कहानी के साथ है।

2 दो टीलों का शहर

कड़ी 2 · कालीबंगा · किताब के पन्ने 28-29

हड़प्पा से पहले और हड़प्पा के दौर का शहर, ऊपर से देखा हुआ: पश्चिम का गढ़ी वाला टीला और पूर्व का बसा हुआ शहर।

3 एक दर्रा, दो कहानियां

कड़ी 8 · हल्दीघाटी, 1576 · किताब के पन्ने 156-157

18 जून 1576 का दिन, चार मोड़ों में: सेनाएं कहां से आईं, कहां भिड़ीं, और क्यों दोनों पक्ष इसे अपनी जीत कहते रहे।

4 नक्शे से बना शहर

कड़ी 10 · जयपुर, 1727 · किताब के पन्ने 202-203

सीधी सड़कें, नौ चौकड़ियां और बीच में राजमहल: जयपुर का नक्शा, जो शहर बसने से पहले कागज पर बना।

5 सात चरण

कड़ी 14 · राजस्थान का एकीकरण · किताब के पन्ने 274-275

1948 से 1956 तक, सात सीढ़ियों में: कौन-सी रियासतें कब जुड़ीं, राजधानी कहां रही, और नक्शा कैसे पूरा हुआ।

हर दोहरे पन्ने पर

बायां पन्ना देखने का है: एक बड़ा नक्शा, समय-रेखा या रेखाचित्र, और उसके लोग।

दायां पन्ना समझने का है: क्या हुआ, कैसे पता है, और इसका मतलब क्या है।

सोत कहते हैं और **परंपरा कहती है**: जहां दोनों अलग बात कहें, किताब दोनों रखती है।

खुद देखिए: हर पन्ने के आखिर में कुछ ऐसा, जो आप अपने शहर या गांव में जाकर देख सकते हैं।

सूची

प्रस्तावना — आज

00-01 चित्तौड़, आज सुबह 10

कड़ी 1 · यह धरती

01-01 एक तिरछी दीवार 12
01-02 रेत का समंदर 14
01-03 कुछ समंदर तक, कुछ रेत में 16
01-04 हर बूंद का हिसाब 18
01-05 मेवाड़ से मेवात तक 20
01-06 रास्ते जो इतिहास लाए 22

कड़ी 2 · पहले लोग — लगभग 5000 से 1000 ईसा पूर्व

02-01 पत्थर से तांबे तक 24
02-02 बागोर के चरवाहे 26
02-03 दो टीलों का शहर 28
02-04 सबसे पुराना जुता खेत 30
02-05 जो मिला, जो सोचा गया 32
02-06 एक नदी जो खो गई 34
02-07 आहड़ का घर 36
02-08 काले-लाल बर्तन 38
02-09 तांबे वाला गांव 40
02-10 कौन किससे जुड़ा था 42

कड़ी 3 · हम यह सब कैसे जानते हैं

03-01 पत्थर पर लिखी खबरें 44
03-02 एक शिलालेख पढ़िए 46
03-03 तांबे की पट्टी, कागज की बही 48
03-04 किसकी कलम, किसका दरबार 50
03-05 सिक्के बोलते हैं 52
03-06 टॉड और दो धागे 54

कड़ी 4 · जनपद और साम्राज्य — लगभग 600 ईसा पूर्व से 600

04-01 विराट का देश 56
04-02 बैराठ में अशोक 58
04-03 बिना राजा के राज्य 60
04-04 मिट्टी में दबे शहर 62
04-05 रंगमहल के कारीगर 64
04-06 गुप्त, हूण और हर्ष 66

कड़ी 5 · नए कुल, नए किले — 600 से 1000

05-01 राजपूत कहां से आए? 68
05-02 आबू का अग्निकुंड 70
05-03 गुहिल और बप्पा रावल 72
05-04 मंडोर से कन्नौज तक 74
05-05 एक शहर, तीन दावेदार 76
05-06 नागभट्ट से मिहिरभोज 78
05-07 ओसियां के मंदिर 80
05-08 उत्तर का किवाड़ 82
05-09 आबू के परमार 84
05-10 साल 1000 का नक्शा 86

कड़ी 6 · चौहान और सुल्तान — 1000 से 1311

06-01 नमक की झील के राजा 88
06-02 अजयमेरु 90
06-03 कवि राजा विग्रहराज 92
06-04 पृथ्वीराज: दो तस्वीरें 94
06-05 तराइन, दो बार 96
06-06 दिल्ली में नई ताकत 98
06-07 रणथंभौर का हम्मीर 100
06-08 एक घेरा कैसे चलता है 102
06-09 चित्तौड़, 1303 104
06-10 पद्मिनी: कहानी का सफर 106
06-11 साका और जौहर 108
06-12 जालौर का कान्हड़दे 110
06-13 चौहानों का पेड़ 112
06-14 1311 का सबक 114

कड़ी 7 · मेवाड़ फिर उठा — 1326 से 1527

07-01 चित्तौड़ लौटा 116
07-02 मेवाड़ दरबार में राठौड़ 118
07-03 कुम्भा के किले 120
07-04 जीत की मीनार 122
07-05 कुम्भा का दरबार 124
07-06 मंडोर से जोधपुर 126
07-07 चट्टान पर किला 128
07-08 बीका का राज 130
07-09 सांगा का फैलता राज 132

07-10 बाबर आया 134
07-11 खानवा, 1527 136
07-12 तोप और घोड़ा 138
07-13 मेवाड़ का पेड़ 140
07-14 1527 का नक्शा 142

कड़ी 8 · मुगलों का दौर 1527 से 1615

08-01 मालदेव का मारवाड़ 144
08-02 गिरि-सुमेल, 1544 146
08-03 चित्तौड़, 1535 148
08-04 आमेर का रास्ता 150
08-05 चित्तौड़, 1568 152
08-06 दो रास्ते 154
08-07 एक दर्रा, दो कहानियां 156
08-08 मारवाड़ का भूला राजा 158
08-09 मानसिंह के मोर्चे 160
08-10 रायसिंह का किला 162
08-11 दिवेर से चावंड 164
08-12 1615 का समझौता 166
08-13 रिश्तों का जाल 168
08-14 आमेर का पेड़ 170

कड़ी 9 · राज कैसे चलता था 16वीं से 18वीं सदी

09-01 राजा से किसान तक 172
09-02 जागीर, खालसा, भोम 174
09-03 मनसब का हिसाब 176
09-04 फसल का बंटवारा 178
09-05 साल भर के लाग-बाग 180
09-06 बही का एक पन्ना 182
09-07 एक गांव का नक्शा 184
09-08 दरबार का दिन 186

कड़ी 10 · औरंगजेब से सवाई जयसिंह 1658 से 1743

10-01 मिर्जा राजा के मोर्चे 188
10-02 राजसिंह की टक्कर 190
10-03 झील पर लिखी किताब 192
10-04 एक बच्चा, एक संकट 194
10-05 दुर्गादास 196
10-06 तीस साल की लड़ाई 198
10-07 सवाई जयसिंह 200
10-08 नक्शे से बना शहर 202
10-09 पत्थर की घड़ी 204
10-10 ढीले मुगल, बिखरे राज 206

कड़ी 11 · मराठे, पिंडारी और कंपनी 1734 से 1832

11-01 चौथ का हिसाब 208
11-02 रामपुरा कोई नहीं पहुंचा 210
11-03 दो भाई, एक गद्दी 212
11-04 एक रिश्ता, तीन दरबार 214
11-05 लुटेरे से नवाब तक 216
11-06 चौदह दस्तखत, छह साल 218
11-07 कागज पर आजादी, राज में दखल 220
11-08 हर दरबार पर एक नजर 222

कड़ी 12 · 1857 1857 से 1858

12-01 छह छावनियां, चार बगावतें 224
12-02 28 मई की दोपहर 226
12-03 मई से अक्टूबर, एक रास्ता नहीं 228
12-04 आउवा का ठाकुर 230
12-05 कोटा के छह महीने 232
12-06 तात्या टोपे का रास्ता 234
12-07 राजा एक तरफ, लोग दूसरी 236
12-08 नया हुक्म, पुराना बोझ 238

कड़ी 13 · खेत और जंगल की आवाज 1897 से 1941

13-01 लाग-बाग का बोझ 240
13-02 बिजोलिया के 44 साल 242
13-03 पथिक का जाल 244
13-04 बेगू: जीत और गोली 246
13-05 शेखावाटी और सीकर 248
13-06 नीमूचाणा, 1925 250
13-07 सुधार से आंदोलन तक 252
13-08 मानगढ़ की पहाड़ी 254
13-09 ना हाकिम, ना हुकुम 256
13-10 आवाजों का नक्शा 258

कड़ी 14 · प्रजामंडल से राजस्थान 1920 के दशक से 1956

14-01 अखबार जो जगाते थे 260
14-02 सभाएं और संघ 262
14-03 रियासत-दर-रियासत 264
14-04 जयपुर प्रजामंडल 266
14-05 तीन प्रजामंडल 268
14-06 आगे चलती औरतें 270
14-07 1947 का सवाल 272
14-08 सात चरण 274
14-09 30 मार्च 1949 276

उपसंहार 1 नवंबर 1956

15-01 1 नवंबर 1956 278

चित्तौड़, आज सुबह

चित्तौड़गढ़ शहर के ऊपर एक लंबी, अकेली पहाड़ी है और उस पर एक किला। उसमें तेरह सौ साल की परतें हैं: कुंड, दरवाजे, मंदिर, मीनारें और तीन घेरों की यादें। इस किताब की कहानी यहीं से शुरू होती है।

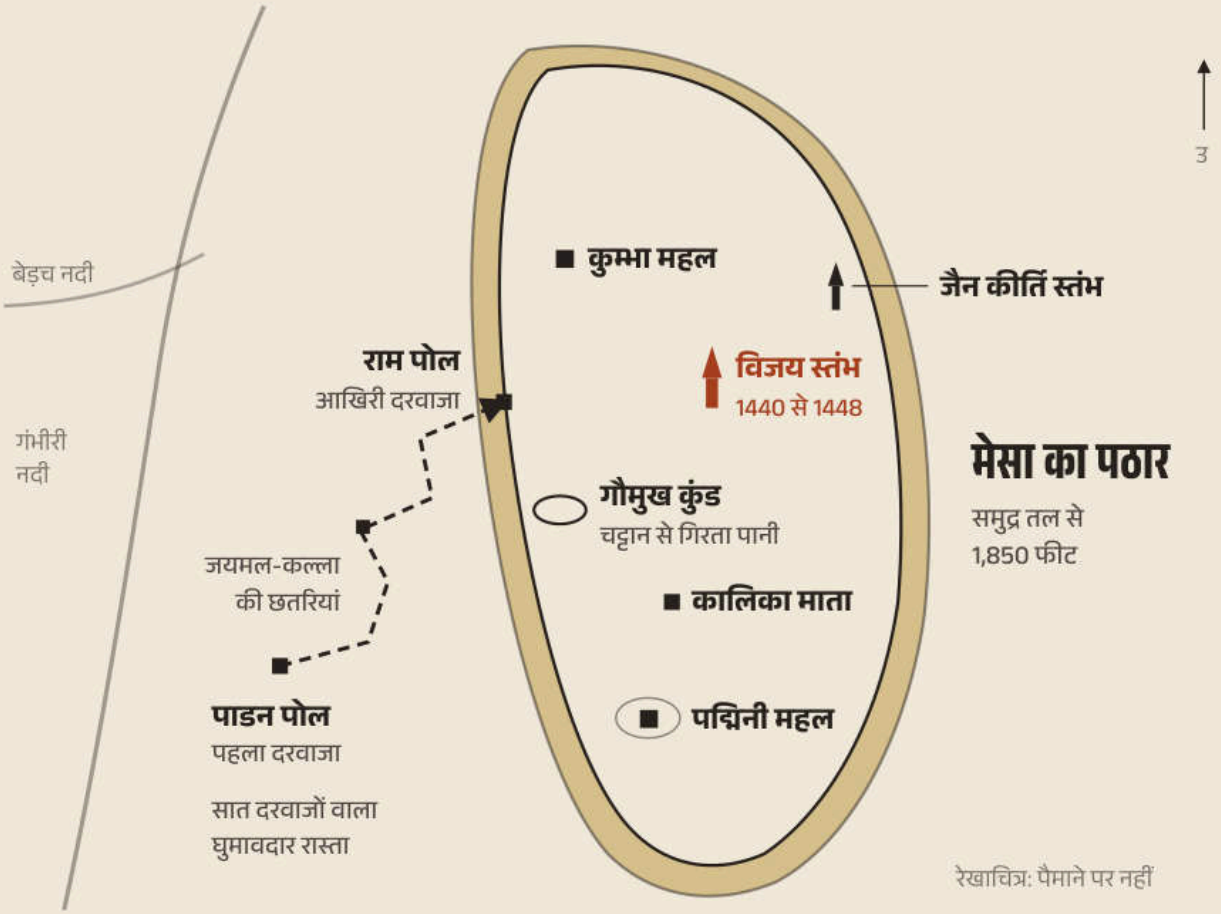

एक पहाड़ी, चार परतें

मोरी राजा: परंपरा के अनुसार 7वीं सदी में मोरी (मौर्य) राजा चित्रांगद ने किला बनवाया। तभी इसका नाम चित्रकूट पड़ा।

कुम्भा: 1437 में सारंगपुर में मालवा पर जीत हुई। उसकी याद में कुम्भा ने नौ मंजिल का विजय स्तंभ बनवाया।

गुहिल: परंपरा कहती है कि बप्पा रावल ने 734 में यह किला लिया। फिर सदियों तक यह मेवाड़ की राजधानी रहा।

तीन घेरे: 1303, 1535 और 1568। आखिरी घेरे के बाद मेवाड़ की राजधानी उदयपुर चली गई। हर घेरे की पूरी कहानी इस किताब में अपने समय पर आएगी।

SAMPLE · litgram.in

एक पहाड़ी, तेरह सौ साल

1 ऊंची और अकेली

पहाड़ी मैदान से करीब 500 फीट ऊंची है, और पास ही गंभीरी और बेड़च नदियां मिलती हैं। ऊपर जाने का एक ही घुमावदार रास्ता है, जिस पर सात दरवाजे (पोल) हैं। कहावत है: *गढ़ तो चित्तौड़गढ़, बाकी सब गढ़ैया।*

2 ऊपर पानी

पहाड़ी के ऊपर कुंड और तालाब हैं। गौमुख कुंड में चट्टान से पानी गिरता है। लंबे घेरे में पानी ही सबसे बड़ा सहारा था। इसीलिए राजा इस पहाड़ी पर टिके रहे।

3 दो मीनारें

विजय स्तंभ 122 फीट ऊंचा है। उसे शिल्पी जैता और उसके बेटों नापा, पोमा और पूंजा ने बनाया। पास का जैन कीर्ति स्तंभ 12वीं सदी में व्यापारी जीजा शाह बघेरवाल ने बनवाया। यहां व्यापारी भी पैसा लगाते थे।

4 तीन घेरे

1303 में अलाउद्दीन खिलजी, 1535 में गुजरात के बहादुर शाह और 1568 में अकबर ने किला घेरा। तीनों बार किला गिरा। हर बार अंत में साका हुआ: पुरुष आखिरी लड़ाई में निकले और औरतों ने जौहर किया, यानी आग में जान दी।

इस किले की दो तरह की कहानियां

स्रोत कहते हैं

- विजय स्तंभ पर खुदी प्रशस्ति (शिलालेख) कुम्भा के काम गिनाती है।
- 1568 के घेरे का ब्योरा अकबर के इतिहासकार अबुल फजल ने लिखा।

परंपरा कहती है

- रानी पद्मिनी की कहानी, जो 1540 में जायसी के *पद्मावत* में मिलती है।
- पन्ना धाय ने अपना बेटा देकर बालक उदयसिंह को बचाया।
- 1303 के घेरे में गोरा और बादल नाम के दो योद्धा लड़े।

तो यह सब कैसे बना?

यह किताब इसी सवाल का जवाब है। इसमें राजा ही नहीं, व्यापारी, शिल्पी, किसान और घेरों में फंसे आम लोग भी हैं। हम उस जमीन से शुरू करेंगे जिस पर यह पहाड़ी खड़ी है, फिर पहले लोगों, राजाओं और घेरों तक चलेंगे। हर पन्ने पर हम बताएंगे कि कौन-सी बात किसी शिलालेख या उस समय के लेखक से आती है, और कौन-सी बाद की परंपरा से। दोनों जरूरी हैं, पर दोनों एक नहीं हैं। जहां किसी कहानी पर सवाल है, वहां हम दोनों बातें साथ रखकर दिखाएंगे।

आगे → पर किले से पहले जमीन थी। पहले उस जमीन को देखिए, जिसने यह सारा इतिहास तय किया।

खुद देखिए राम पोल से अंदर जाइए और गौमुख कुंड तक पैदल चलिए। रास्ते में गिनिए कि आपको कितने कुंड और तालाब दिखते हैं। फिर सोचिए कि महीनों के घेरे में यह पानी कितना काम आता होगा।

SAMPLE · litgram.in

कड़ी 2 · पहले लोग · कालीबंगा

दो टीलों का शहर

हनुमानगढ़ में घग्गर के सूखे पाट के किनारे दो टीले हैं। उनके नीचे करीब साढ़े चार हजार साल पुराना एक शहर दबा था, हड़प्पा सभ्यता का। यहां उसका नक्शा देखिए: पश्चिम में ऊंची गढ़ी, पूरब में सीधी गलियों वाला निचला शहर।

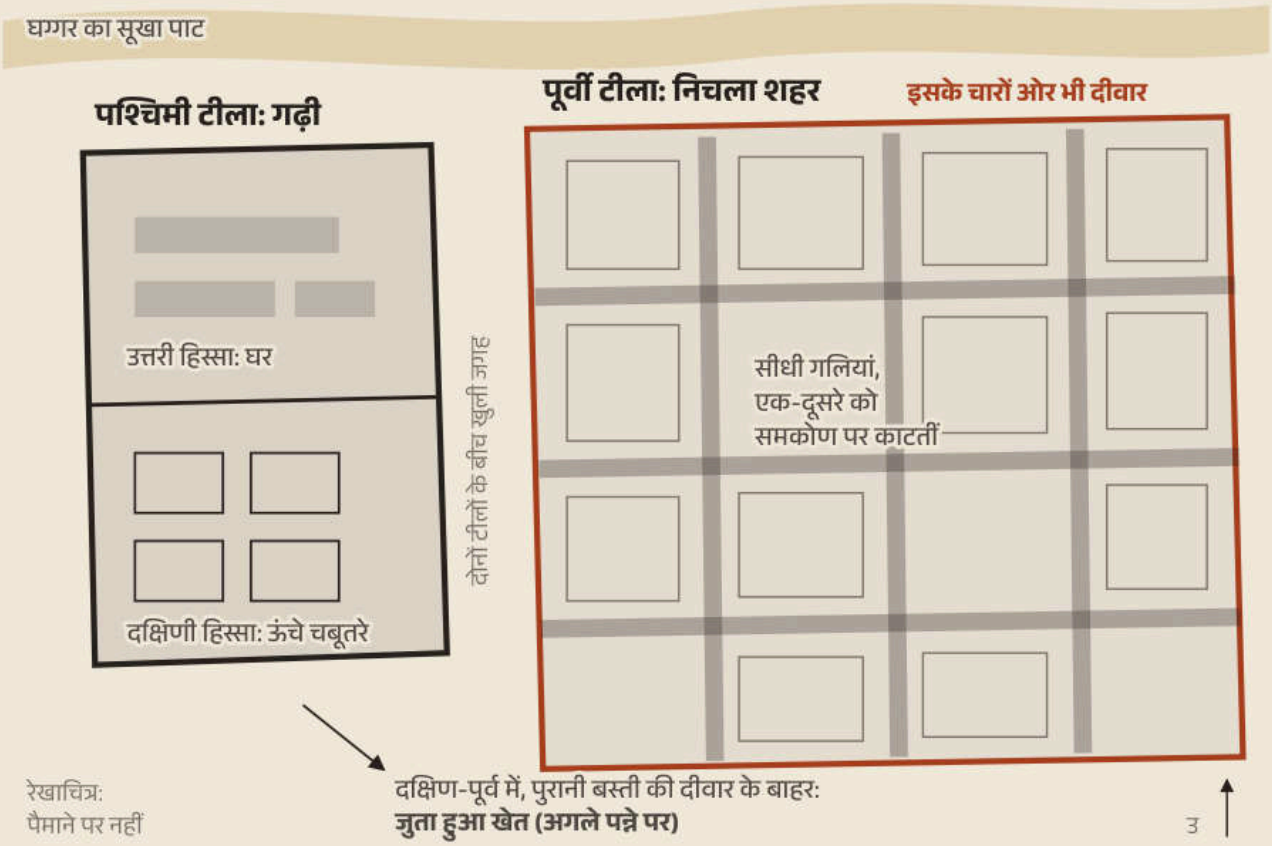

ईंट का नाप: पहले और बाद में

पहले दौर में (लगभग 2450 से 2300 ईसा पूर्व): ईंटें 30 × 20 × 10 सेमी: लंबाई, चौड़ाई, मोटाई का अनुपात 3:2:1।

हड़प्पा के दौर में (लगभग 2300 से 1750 ईसा पूर्व): ईंटें 30 × 15 × 7.5 सेमी, अनुपात 4:2:1। ईंट पतली और लंबी हो गई।

इसका मतलब: 4:2:1 वाली ईंट हड़प्पा के दूसरे शहरों में भी मिलती है। दूर-दूर के शहर नाप के एक जैसे नियम मानते थे।

SAMPLE · litgram.in

योजना से बना शहर

1 दो टीले

पश्चिम का टीला छोटा पर ऊंचा है। उस पर गढ़ी थी, ऊंचे चबूतरे पर, दीवार से घिरी। माना जाता है कि वहां शासक या पुरोहित रहते थे। पूरब के बड़े टीले पर आम लोगों और व्यापारियों के घर थे।

2 दोनों पर दीवार

हड़प्पा के कई शहरों में सिर्फ गढ़ी के चारों ओर दीवार मिलती है। कालीबंगा में निचला शहर भी दीवार से घिरा था। यही इसकी खास पहचान है।

3 सीधी गलियां

निचले शहर की गलियां उत्तर-दक्षिण और पूरब-पश्चिम में सीधी चलती थीं और एक-दूसरे को समकोण पर काटती थीं। बीच के चौकोर हिस्सों में घर बने। इसे जाल या ग्रिड की योजना कहते हैं।

4 कच्ची ईंट, पक्की नाली

ज्यादातर घर धूप में सुखाई कच्ची ईंटों के थे। कुओं, नहाने की जगहों और नालियों में पक्की ईंट लगी। घर का गंदा पानी लकड़ी के खोखले तनों और जमीन में गड़े घड़ों में जाता था।

एक जगह, दो बस्तियां

पहले की बस्ती

- लगभग 2450 से 2300 ईसा पूर्व।
- एक ही बस्ती, कच्ची ईंटों की दीवार से घिरी।
- दीवार के बाहर जुता हुआ खेत।

हड़प्पा का शहर

- लगभग 2300 से 1750 ईसा पूर्व।
- ग्रिड वाली गलियां, तय नाप की ईंटें।

यह शहर मिला कैसे

1916-18 में बीकानेर रियासत में सर्वे करते हुए इटली के भाषाविद एल.पी. तेस्सीतोरी ने इन टीलों पर ध्यान दिया। 1952 में अमलानंद घोष ने इन्हें हड़प्पा की जगह के रूप में पहचाना। फिर 1961 से 1969 तक बी.बी. लाल और बी.के. थापर ने नौ बार खुदाई करवाई।

राजधानी थी या नहीं?

इतिहासकार दशरथ शर्मा ने कालीबंगा को सिंधु सभ्यता की तीसरी राजधानी कहा। यह उनकी राय है। हड़प्पा की लिपि आज तक पढ़ी नहीं गई, इसलिए राजा या राजधानी का कोई लिखा सबूत नहीं।

आगे → शहर बसने से पहले भी यहां लोग खेती करते थे। उनका एक जुता हुआ खेत खुदाई में मिला।

खुद देखिए कालीबंगा के संग्रहालय में दोनों दौर की ईंटें ढूंढिए और नाप का फर्क आंख से देखिए: बाद वाली ईंट पतली है।

SAMPLE · litgram.in

कड़ी 8 · मुगलों का दौर · हल्दीघाटी, 1576

एक दर्रा, दो कहानियां

18 जून 1576 को अरावली के एक संकरे दर्रे के बाहर महाराणा प्रताप और अकबर की सेना आमने-सामने हुईं। लड़ाई एक ही दिन चली, पर उसकी कहानी चार सौ साल से कही जा रही है। यहां देखिए कि लड़ाई कहां हुई, और कहानी का कौन-सा हिस्सा आंखों देखा है।

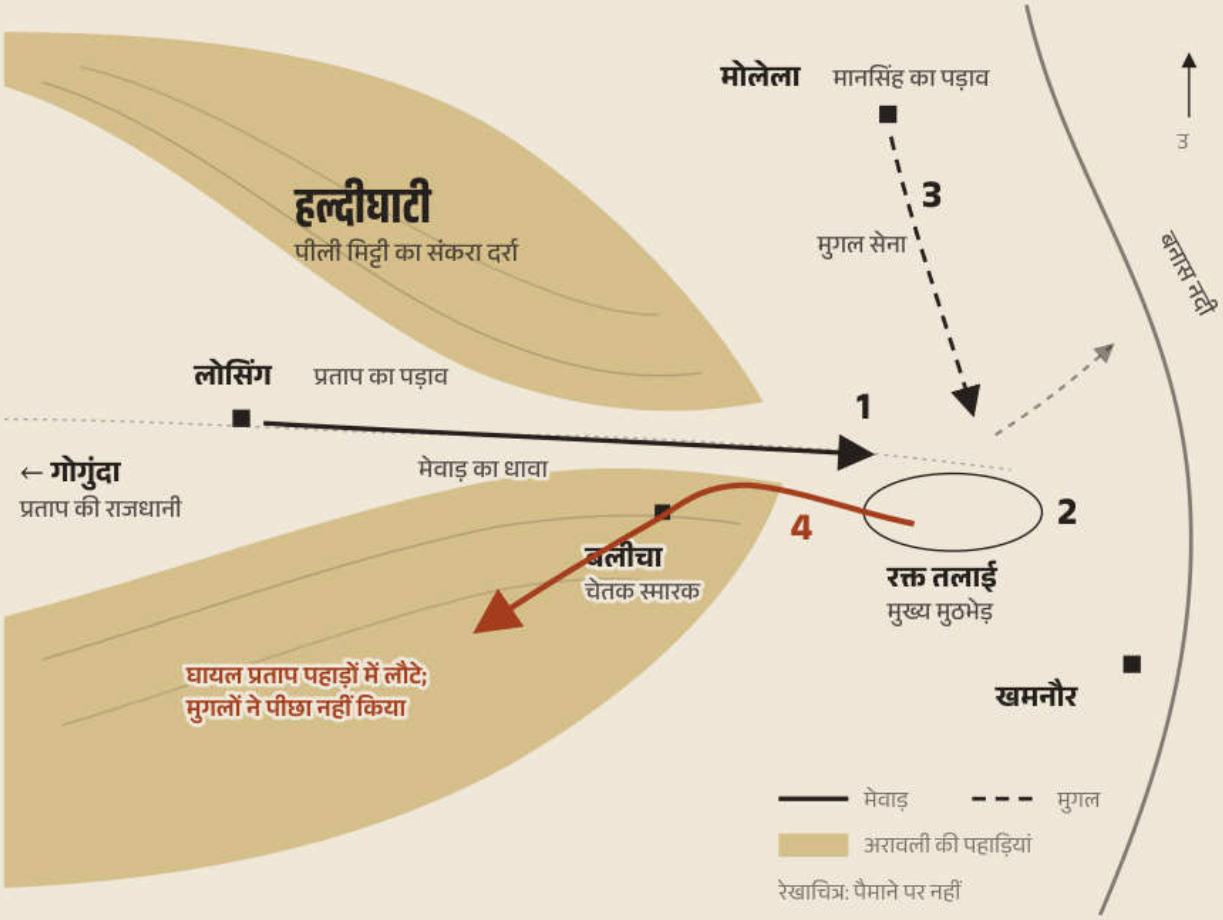

एक युद्ध, चार नाम

हल्दीघाटी: दर्रे की मिट्टी हल्दी जैसी पीली है। आज यही नाम सबसे ज्यादा चलता है।

गोगुंदा का युद्ध: बदायूंनी का नाम। वह खुद मुगल सेना के साथ लड़ा और आंखों देखा लिखा।

खमनौर का युद्ध: अकबर के दरबारी इतिहासकार अबुल फजल ने पास के गांव के नाम पर कहा।

मेवाड़ की थर्मोपल्ली: कर्नल टॉड ने यूनान के उस दर्रे से तुलना की, जहां थोड़े सैनिकों ने बड़ी सेना रोकी थी।

SAMPLE · litgram.in

एक दिन, चार मोड़

1 **धावा**

प्रताप की सेना दर्रे से निकलकर सीधे टूट पड़ी। सबसे आगे की टुकड़ी (*हरावल*) अफगान सेनापति हकीम खां सूर के हाथ में थी। बदायूंनी मानता है कि मुगलों की अगली पंक्ति कई कोस तक भाग गई।

2 **रक्त तलाई**

लड़ाई खमनौर के पास खुले मैदान में आ पहुंची। हाथी भी भिड़े; प्रताप का हाथी रामप्रसाद बाद में मुगलों के हाथ लगा। इस मैदान का नाम ही बताता है कि यहां कितना खून बहा।

3 **एक अफवाह**

मुगल डगमगा रहे थे, तभी पीछे की टुकड़ी से मिहतर खां ने ढोल बजवाकर पुकारा कि बादशाह अकबर खुद आ पहुंचे हैं। अकबर वहां नहीं था, पर भागते सैनिक लौट आए।

4 **राजछत्र**

घायल प्रताप घिरने लगे। झाला मान (कुछ स्रोतों में झाला बीदा) ने राजछत्र अपने ऊपर ले लिया, ताकि शत्रु उन्हें ही राणा समझें। वे मारे गए; प्रताप पहाड़ों में निकल गए।

कहानी के दो धागे

स्रोत कहते हैं

- मुगल सेना की कमान आमेर के कुंवर मानसिंह के हाथ थी, साथ में आसफ खां। दोनों ओर राजपूत लड़े।
- मुगल मैदान पर टिके, पर प्रताप को न पकड़ सके। नाराज अकबर ने कुछ समय मानसिंह और आसफ खां का दरबार आना रोक दिया।

परंपरा कहती है

- चेतक ने मानसिंह के हाथी के माथे पर अगले पैर टिकाए और प्रताप ने भाला चलाया।
- घायल चेतक ने बलीचा का नाला लांघकर मालिक को बचाया और वहीं दम तोड़ा।
- टॉड के अनुसार, रूठे भाई शक्तिसिंह ने पीछा करते मुगल सवारों को रोका और दोनों भाई वहीं मिले।

तो जीता कौन?

शाम तक मैदान मुगलों के पास था, इसलिए अकबर के इतिहासकार इसे जीत लिखते हैं। पर अकबर चाहता था कि प्रताप पकड़े जाएं या झुकें, और ऐसा नहीं हुआ। प्रताप पहाड़ों में लौटे, छापामार लड़ाई का रास्ता चुना और छह साल बाद दिवेर (1582) में पलटकर वार किया। इसीलिए कई इतिहासकार कहते हैं कि हल्दीघाटी में किसी की साफ जीत नहीं हुई।

आगे → जिन बरसों में प्रताप मेवाड़ के पहाड़ों में थे, उन्हीं बरसों में मारवाड़ का एक राजा भी अकबर के आगे झुकने से मना कर रहा था: राव चंद्रसेन।

खुद देखिए बाएं पन्ने का नक्शा लेकर हल्दीघाटी से बलीचा और फिर रक्त तलाई तक चलिए। दर्रा कितना संकरा है और मैदान कितना खुला, यह देखकर समझ आएगा कि प्रताप ने दर्रे से निकलकर हमला क्यों किया।

SAMPLE · litgram.in

कड़ी 10 · औरंगजेब से सवाई जयसिंह · जयपुर का नक्शा

नक्शे से बना शहर

18 नवंबर 1727 को आमेर की तलहटी में एक नया शहर बसना शुरू हुआ। आमेर का किला पहाड़ों से घिरा और संकरा था, इसलिए नया शहर मैदान में बना। सड़कें सीधी थीं और शहर नौ चौकड़ियों में बंटा था।

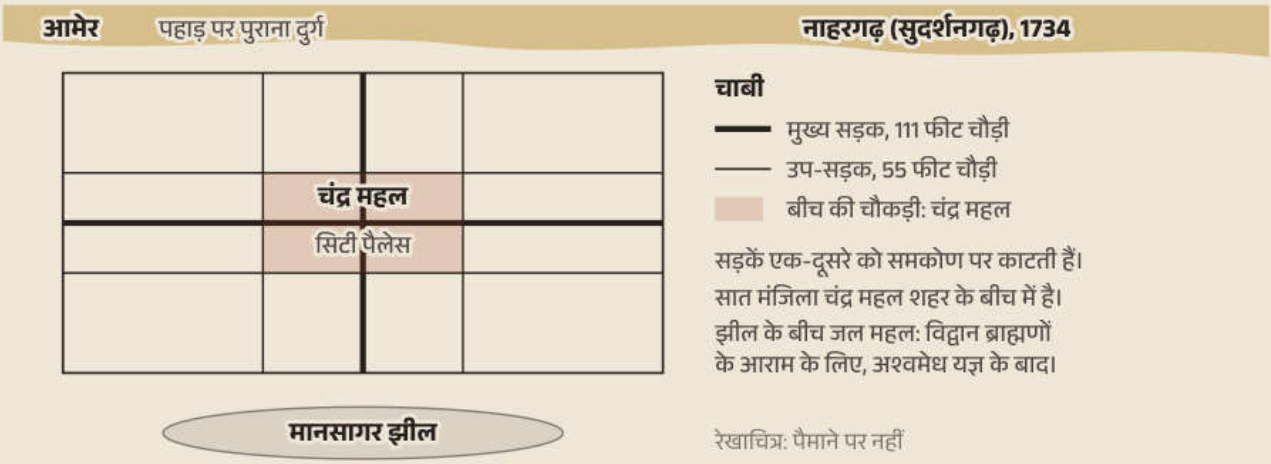

नक्शे के बारे में

जगह: आमेर दुर्ग पहाड़ों से घिरा था और वहां आगे फैलने की गुंजाइश नहीं थी। इसलिए जयसिंह ने आमेर की तलहटी में शिकारगाह की समतल जमीन चुनी, यानी शिकार के लिए रखी गई जमीन।

नक्शा किसने बनाया: बंगाल के गणितज्ञ और वास्तुशास्त्री विद्याधर भट्टाचार्य को प्रधान वास्तुकार और नगर नियोजक कहा गया है। पुर्तगाली खगोलशास्त्री फादर इमैनुएल दे जेवियर डिसिल्वा भी इस काम में थे।

पहले आमेर, फिर जयपुर: आमेर के महलों की हिफाजत के लिए आमेर की चील का टीला पहाड़ी पर जयगढ़ दुर्ग बना। नया शहर उसी इलाके में बसा, पर पहाड़ी किले से नीचे।

पानी: मानसागर झील के बीच जल महल बना। यहां अश्वमेध यज्ञ कराने वाले विद्वान ब्राह्मण आराम करते थे, यह स्रोत कहता है।

मूर्ति का सफर: गोविंद देवजी का मंदिर पहले वृंदावन में था। स्रोत कहता है कि मानसिंह ने 1590 में वहां सात मंजिला मंदिर बनवाया। जयसिंह ने उसकी प्रतिमा जयपुर लाकर सिटी पैलेस के आंगन में रखी।

दो पहाड़ी किले: स्रोत के अनुसार जयगढ़ आमेर के महलों की हिफाजत के लिए बना, और नाहरगढ़ नए शहर को मराठा हमलों से बचाने के लिए। जयगढ़ में तोप ढालने का कारखाना भी था।

नक्शे की तीन परतें: पहली परत सिद्धांत है, जो परंपरा से जुड़ा है। दूसरी परत नाप है: 111 और 55 फीट की सड़कें, जो स्रोत में लिखी हैं। तीसरी परत जगह है: पहाड़ पर किला, नीचे मैदान, और उसके किनारे झील।

SAMPLE · litgram.in

सीधी सड़कें, बीच का राजमहल

1 चौड़ी और सीधी सड़कें

मुख्य सड़कें 111 फीट चौड़ी रखी गईं और उप-सड़कें 55 फीट। सभी मुख्य सड़कें एक-दूसरे को समकोण पर काटती हैं। फ्रांसीसी यात्री विक्टर जैकोमोंट ने इस नगर योजना को देखकर कहा था, "जयपुर भारत का पेरिस है।"

2 बीच में राजमहल

नगर के बीच में सात मंजिला चंद्र महल, जिसे सिटी पैलेस भी कहते हैं। पिछले पन्ने का वही महल है। उसके आंगन में वृंदावन से लाई गई गोविंद देवजी की मूर्ति रखी गई। जयसिंह ने राज गोविंद देवजी को सौंप दिया और खुद उनके "दीवान" बनकर राज चलाया।

3 पहरा पहाड़ पर

1734 में मराठों के हमलों से बचने के लिए अरावली की एक पहाड़ी पर नाहरगढ़ दुर्ग बना, जिसे सुदर्शनगढ़ भी कहा गया। शहर मैदान में था, और ऊपर पहाड़ी पर किला खड़ा हुआ। यही अरावली है, जो पहली कड़ी में एक तिरछी दीवार की तरह दिखी थी।

4 नौ चौकड़ियां, नौ ग्रह

शहर को नौ चौकड़ियों में बांटने का सिद्धांत प्राचीन शिल्पशास्त्र के ग्रिड से लिया गया माना जाता है। नौ चौकड़ियां नौ ग्रहों से भी जोड़ी जाती हैं। स्रोत इसे नक्शे की जड़ कहता है, पर यह जड़ परंपरा की है।

यह नक्शा कहां से आता है

स्रोत कहते हैं

- नगर की स्थापना: 18 नवंबर 1727, पौष वदी प्रतिपदा, वि.सं. 1784।
- मुख्य सड़कें 111 फीट, उप-सड़कें 55 फीट।
- चंद्र महल सात मंजिला, नगर के केंद्र में।
- नाहरगढ़ दुर्ग 1734 में बना।

परंपरा कहती है

- नक्शे की जड़ प्राचीन शिल्पशास्त्र के ग्रिड में मानी जाती है।
- नौ चौकड़ियां नौ ग्रहों से जुड़ी बताई जाती हैं।

नक्शा कागज पर, शहर जमीन पर

स्रोत बताता है कि नक्शा किस सिद्धांत पर था और सड़कें कितनी चौड़ी रखी गईं। पर 1727 में कितने घर बसे और कितने मजदूर लगे, यह इस स्रोत में नहीं मिलता। जो बात साफ है, वह यह कि शहर आमेर से अलग, मैदान में और एक योजना के साथ बना।

आगे → उसी शहर में जयसिंह ने आसमान नापने के लिए पत्थर के यंत्र बनवाए।

खुद देखिए किसी नक्शे में जयपुर का पुराना शहर खोलिए। नौ चौकड़ियां गिनिए, फिर बीच की चौकड़ी में क्या बना है, यह खोजिए।

SAMPLE · litgram.in

कड़ी 14 · प्रजामंडल से राजस्थान · एकीकरण

सात चरण

1947 के टुकड़ों को एक राज्य बनाने में साढ़े आठ साल लगे। नीचे की सीढ़ी सात चरण दिखाती है: हर चरण में कुछ रियासतें जुड़ीं, संघ का नाम बढ़ा और राजधानी बदली। क्रम छोटे राज्यों से बड़ी रियासतों की तरफ चला।

18 मार्च 1948 — **मत्स्य संघ** · राजधानी अलवर
अलवर, भरतपुर, धौलपुर, करौली + नीमराणा।

25 मार्च 1948 — **पूर्व राजस्थान संघ** · राजधानी कोटा
कोटा, बूंदी, झालावाड़, टोंक, किशनगढ़, शाहपुरा, बांसवाड़ा, डूंगरपुर, प्रतापगढ़ + कुशलगढ़।

18 अप्रैल 1948 — **संयुक्त राजस्थान** · राजधानी उदयपुर
पूर्व राजस्थान + उदयपुर (मेवाड़)।

30 मार्च 1949 — **वृहत् राजस्थान** · राजधानी जयपुर
संयुक्त राजस्थान + जयपुर, जोधपुर, बीकानेर, जैसलमेर + लावा।

15 मई 1949 — **संयुक्त वृहत् राजस्थान** · राजधानी जयपुर
वृहत् राजस्थान + मत्स्य संघ (शंकरराव देव समिति)।

26 जनवरी 1950 — **राजस्थान संघ** · राजधानी जयपुर
संयुक्त वृहत् + सिरोही (आबू-दिलवाड़ा छोड़कर)।

1 नवंबर 1956 — **पुनर्गठित राजस्थान** · राजधानी जयपुर
+ अजमेर-मेरवाड़ा, आबू-दिलवाड़ा, सुनेल टप्पा; सिरोंज बाहर।

रेखाचित्र: तिथियां और राजधानियां स्रोत की तालिका से; लाल चरण सबसे बड़ा दिन है।

नाम की लंबाई बताती है कि संघ कितना बड़ा हुआ: मत्स्य से शुरू होकर पुनर्गठित राजस्थान तक। राजधानी पहले अलवर, फिर कोटा, फिर उदयपुर और आखिर में जयपुर पर टिकी।

पहले दो चरण छोटी रियासतों के समूह थे, तीसरे में मेवाड़ आया, और चौथे में चार सबसे बड़ी रियासतें। यानी एकीकरण नीचे से ऊपर की तरफ बढ़ा, ऊपर से नीचे नहीं।

एकीकरण के कुछ नाम

के.एम. मुंशी: मत्स्य संघ का नाम इन्हीं के सुझाव पर पड़ा।

शंकरराव देव: मत्स्य की जनता की राय लेने वाली समिति के अध्यक्ष।

गोकुल लाल असावा: पूर्व राजस्थान संघ के प्रधानमंत्री (शाहपुरा)।

चंद्रवीर सिंह: बांसवाड़ा के महारावल; विलय पत्र पर भावुक कथन।

शोभाराम कुमावत: मत्स्य के पहले प्रधानमंत्री; बाद में शास्त्री मंत्रिमंडल में मंत्री।

माणिक्य लाल वर्मा: संयुक्त राजस्थान के प्रधानमंत्री (उदयपुर)।

SAMPLE · litgram.in

छोटे पहले, बड़े बाद में

1 छोटे राज्य पहले क्यों

पिछले पन्ने की शर्त याद है: अलग रहने के लिए 10 लाख लोग और 1 करोड़ आय चाहिए थी। छोटी रियासतें वह कसौटी पूरी नहीं करती थीं, इसलिए वे पहले आपस में जुड़ीं: मत्स्य और पूर्व राजस्थान। पहले दो चरणों का उद्घाटन एन.वी. गाडगिल ने किया, तीसरे (मेवाड़ वाले) का पं. नेहरू ने उदयपुर में।

2 राजाओं का दुख

विलय हर राजा के लिए अपनी गद्दी छोड़ना था। 25 मार्च 1948 को पूर्व राजस्थान के विलय पत्र पर हस्ताक्षर करते समय बांसवाड़ा के महारावल चंद्रवीर सिंह ने कहा: “मैं अपने डेथ वारंट पर हस्ताक्षर कर रहा हूं।” दूसरी तरफ मत्स्य संघ का नाम के.एम. मुंशी के सुझाव पर पड़ा, पुराने मत्स्य देश की याद में।

3 चार बड़ी रियासतों का दिन

30 मार्च 1949 को जयपुर, जोधपुर, बीकानेर और जैसलमेर संयुक्त राजस्थान में मिलीं, और लावा ठिकाना भी। संघ वृहत् राजस्थान बना, राजधानी जयपुर हुई। यही वह दिन है जिसका पूरा ब्यौरा अगला पन्ना देता है, और जिसकी याद में राजस्थान दिवस मनता है।

4 जनता की राय, फिर नाम

मत्स्य की भाषा-संस्कृति उत्तर प्रदेश से मिलती थी, इसलिए शंकरराव देव समिति ने वहां की जनता की राय ली; बहुमत राजस्थान चाहता था, और 15 मई 1949 को मत्स्य वृहत् में मिला। 26 जनवरी 1950 को सिरोही जुड़ा (आबू छोड़कर), संविधान लागू हुआ और नाम "राजस्थान" पक्का हुआ।

हर संघ के दो पद

मत्स्य	पूर्व	संयुक्त	संयुक्त वृहत् / संघ
राजप्रमुख: उदयभान सिंह (धौलपुर)। प्रधानमंत्री: शोभाराम कुमावत।	राजप्रमुख: भीमसिंह द्वितीय (कोटा)। प्रधानमंत्री: गोकुल लाल असावा।	राजप्रमुख: महाराणा भोपाल सिंह। प्रधानमंत्री: माणिक्य लाल वर्मा।	राजप्रमुख: सवाई मानसिंह द्वितीय। प्रधानमंत्री: हीरालाल शास्त्री।

राजप्रमुख संघ का प्रमुख होता था, प्रधानमंत्री मंत्रिमंडल का मुखिया।

आठ साल, सात कदम

एकीकरण कोई एक आदेश नहीं था। यह सात अलग-अलग समझौतों और समितियों की सीढ़ी थी, जिसमें हर कदम पर कुछ रियासतें अपनी सहमति से जुड़ीं। कहीं जनता की राय ली गई, कहीं राजाओं को मनाना पड़ा, कहीं नाम और राजधानी पर बहस हुई।

इसलिए नक्शा एक दिन में नहीं बना। 1950 तक भी अजमेर और आबू बाहर थे, और राज्य की शक्ल 1 नवंबर 1956 तक बदलती रही। आखिरी टुकड़ों की कहानी इस किताब का आखिरी पन्ना है।

इन सात कदमों में सबसे बड़ा कदम चौथा था, जब चार सबसे बड़ी रियासतें एक साथ जुड़ीं। उस एक दिन ने तय किया कि नया राज्य किस शहर से चलेगा और उसका चेहरा कौन होगा।

आगे → इन चरणों में एक दिन सबसे बड़ा था: 30 मार्च 1949।

खुद देखिए अपने जिले का नाम लीजिए और सीढ़ी से मिलाइए कि वह किस चरण में राजस्थान का हिस्सा बना: मत्स्य, पूर्व, संयुक्त, वृहत्, या 1956 का पुनर्गठन?

SAMPLE · litgram.in

यह तो बस शुरुआत थी

आपने 135 में से पांच विषय देखे। बाकी किताब इसी तरह चलती है: हर विषय एक चित्र से शुरू होता है, और शब्द उस चित्र को समझाते हैं।

पूरे खंड 1 में

- 16 कड़ियां, 135 दोहरे पन्ने, हर पन्ना रंगीन
- सैकड़ों नक्शे, समय-रेखाएं, रेखाचित्र और वंश-वृक्ष, सब एक ही आधार-नक्शे पर
- तारीखें, नाम और जगहें छपे हुए इतिहास-स्रोतों से मिलाकर, सीधी बोलचाल की हिंदी में
- राजस्थान का इतिहास और संस्कृति पढ़ रहे विद्यार्थियों के लिए, और हर उस पाठक के लिए जो इसे समझना चाहता है

नमूने में नहीं, पर किताब में

तराइन के दो युद्ध, चित्तौड़ के तीन साके, कुंभा का विजय स्तंभ, खानवा 1527, दुर्गादास और तीस साल की लड़ाई, सवाई जयसिंह की पत्थर की घड़ी, 1857 में आउवा और कोटा, तात्या टोपे का रास्ता, बिजोलिया के 44 साल, मानगढ़ की पहाड़ी, और 30 मार्च 1949 का दिन।

साथ का खंड

खंड 2 · कला और संस्कृति

किले, बावड़ियां, चित्रकला की शैलियां, हस्तशिल्प, लोकनृत्य और वाद्य, बोलियां, लोकदेवता, संत और मेले: 134 दोहरे पन्नों में, उसी रंग-रूप में।

पूरी किताब यहां से लीजिए

litgram.in

दोनों खंडों की कीमत, ऑर्डर का तरीका और नई जानकारी इसी वेबसाइट पर मिलेगी। यह नमूना अपने दोस्तों के साथ खुलकर बांटिए।

मुकेश के. शर्मा · शिवाली शर्मा

राजस्थान का इतिहास, समय के क्रम में, एक कहानी की तरह।

हर विषय दो आमने-सामने के पन्नों पर है: एक बड़ा नक्शा, समय-रेखा या रेखाचित्र, और साथ में सीधी, बोलचाल की हिंदी। पढ़ने वाला पहले देखता है, फिर पढ़ता है।

कहानी चित्तौड़ की एक सुबह से शुरू होती है और 1 नवंबर 1956 को पूरे हुए नक्शे पर लौटती है। बीच में अरावली और थार आते हैं, कालीबंगा और आहड़, चौहान और सुल्तान, हल्दीघाटी, जयपुर का बसना, 1857, बिजोलिया के किसान और प्रजामंडल।

जहां परंपरा और सबूत अलग बात कहते हैं, किताब दोनों रखती है: **सोत कहते हैं** और परंपरा कहती है। हर दोहरे पन्ने के आखिर में **खुद देखिए** है: कुछ ऐसा जो आप अपने गांव, शहर या किले में जाकर खुद देख सकते हैं।

इतिहास में रुचि रखने वाले हर पाठक के लिए, घर में, कक्षा में और सफर में।

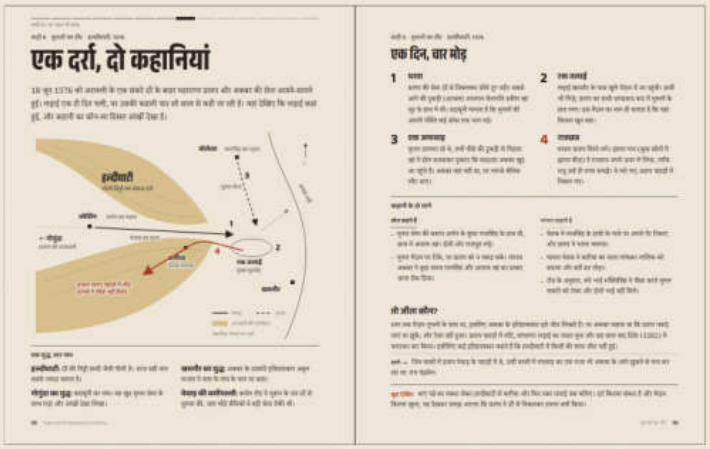

भीतर का एक दोहरा पन्ना: कड़ी 8, हल्दीघाटी

मुकेश के. शर्मा · शिवाली शर्मा

इस खंड की 16 कड़ियां

- **प्रस्तावना** — आज
- **कड़ी 1 · यह धरती**
- **कड़ी 2 · पहले लोग** — लगभग 5000 से 1000 ईसा पूर्व
- **कड़ी 3 · हम यह सब कैसे जानते हैं**
- **कड़ी 4 · जनपद और साम्राज्य** — लगभग 600 ईसा पूर्व से 600
- **कड़ी 5 · नए कुल, नए किले** — 600 से 1000
- **कड़ी 6 · चौहान और सुल्तान** — 1000 से 1311
- **कड़ी 7 · मेवाड़ फिर उठा** — 1326 से 1527
- **कड़ी 8 · मुगलों का दौर** — 1527 से 1615
- **कड़ी 9 · राज कैसे चलता था** — 16वीं से 18वीं सदी
- **कड़ी 10 · औरंगजेब से सवाई जयसिंह** — 1658 से 1743
- **कड़ी 11 · मराठे, पिंडारी और कंपनी** — 1734 से 1832
- **कड़ी 12 · 1857** — 1857 से 1858
- **कड़ी 13 · खेत और जंगल की आवाज** — 1897 से 1941
- **कड़ी 14 · प्रजामंडल से राजस्थान** — 1920 के दशक से 1956
- **उपसंहार** — 1 नवंबर 1956